ई-समाचार

द्विमासिक समाचार पत्रिका

अंक – 04 मार्च—अप्रैल वर्ष - 2015

नए निदेशक का पदभार ग्रहण

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दिनांक 16 अप्रैल 2015 के आदेश के अनुसरण में, प्रो. आर. वी. राज कुमार, प्राध्यापक, इलेक्ट्रॉनिक एवं विद्युत संचार अभियांत्रिकी, भा.प्रौ.सं. खड़गपुर ने दिनांक 22 अप्रैल 2015 से संस्थान निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण किया है। संस्थान निदेशक के जीवनवृत्त निम्न प्रस्तुत है।

निदेशक का जीवनवृत्त

रत्नम वी. राज कुमार का जन्म भारत के मछलीपट्टनम में हुआ था। उन्होंने अभियांत्रिकी की सभी शाखाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए इलेक्ट्रानिकी एवं संचार अभियांत्रिकी के क्षेत्र में वर्ष 1980 में आंध्र विश्वविद्यालय से बीआई की उपाधि तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर से 1982 और 1987 में क्रमशः एम.टेक एवं पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1984 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर के इलेक्ट्रानिक एवं संचार अभियांत्रिकी में संकाय सदस्य के रूप में अपने करियर की शुरुआत करते हुए वे प्राध्यापक के पद पर सेवारत है। वर्ष 2010-15 के दौरान उन्होंने राजीव गांधी ज्ञान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीयूकेटी), हैदराबाद के प्रथम कुलपति का पदभार संभाला और इस नए विश्विद्यालय को गुणवत्तापूर्ण अभियांत्रिकी शिक्षा का मॉडल बनाने की चुनौती को पूरा किया तथा 6000 ग्रामीण छात्रों की बड़ी संख्या में हुई वार्षिक भर्ती के बावजूद कई नई पहल, गुणवत्ता वाले संकाय बढ़ाने एवं विश्व स्तरीय प्रयोगशाला के माध्यम से इसकी पहचान बनाई। इनके नेतृत्व में विश्वविद्यालय को नवाचार आईसीटी आधारित शिक्षा एवं शैक्षणिक प्रणाली के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ। अन्य गतिविधियों के साथ -साथ इन्होंने वर्ष 2003 से 2006 तक भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में शैक्षणिक कार्य के संकायाध्यक्ष, वर्ष 2005 तक दूरसंचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान विद्यालय जी एस सान्याल दूरसंचार विद्यालय में अध्यक्ष तथा वर्ष 2007 से 2010 तक दूरसंचार में उत्कृष्ट भा.प्रौ.सं. केंद्र - वोडाफोन एस्सर के प्रमुख के रूप में भी अपनी सेवा प्रदान की। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय समिति के सदस्य का पदभार भी संभाला। इंडेस्ट (आईएनडीईएसटी) कंजोर्टियम को प्रारंभ करने में उनकी भूमिका अहम रही । उन्होंने भा.प्रौ.सं. खड़गपुर के विकास के लिए संदर्श योजना बनाई और भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में अवरस्नातक शिक्षण में महत्वपूर्ण शैक्षणिक सुधार लाया। वर्ष 1998 में सहयोगी कार्य हेतु वे मिचिगन विश्वविद्यालय में सेवारत थे।

इनके अनुसंधान क्षेत्र में डिजिटल संकेत प्रसंस्करण, बेतार संचार, जाँच एवं प्राक्कलन एवं संचार हेतु वीएलएसआई प्रणाली शामिल है। विभिन्न प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नल एवं सम्मेलनों में इनके लगभग 160 शोध पत्र है तथा इन्होंने विभिन्न स्तरों पर लगभग 140 छात्रों के शोध प्रबंधों को पर्यवेक्षित किया है। इन्होंने अवर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों हेतु अभियांत्रिकी पर तीन विडियो तैयार किया जिसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया गया। वर्तमान में, ये ग्रीन रेडियो, कॉग्निटिव रेडियो एवं जीएलआरटी आधारित जाँच प्रणाली के सक्रिय अनुसंधान कार्य में संलग्न है। तकनीकी शिक्षा में गुणवत्ता लाना भी इनका एक उद्देश्य है जिसमें इन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया और विभिन्न सहयोगी संस्थानों के अध्ययन मंडल में अपनी सेवा प्रदान की तथा पाठ्यक्रम अभ्यास को तैयार करने में भी अपना योगदान दिया । **शेष पृष्ठ 2 पर**.....

प्रो. राज कुमार ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय परियोजना के माध्यम से प्रौद्योगिकी विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने भारत द्वारा सर्वप्रथम विकसित सोनर होमिंग सिस्टम डिज़ाइन किया, डिफेंस हेतु संचार प्रणाली डिज़ाइन की और डीआरडीओ हेतु संज्ञानात्मक रेडियों के विकास हेतु योजना तैयार करने जैसे कई योगदान दिए। उन्हें प्राप्त कई पुरस्कारों में वर्ष 1987 में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार से बॉयज़-कास्ट अनुसंधान अनुदान, वर्ष 2007 में आईएसटीई का बड़ौदा चैप्टर राष्ट्रीय पुरस्कार तथा वर्ष 1984 में आईईईई क्षेत्र 10 के स्नातक पेपर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ छात्र पेपर का पुरस्कार आदि है। उन्होंने सदस्य, जरनल चेयर, टीपीसी चेयर के रूप में तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की अन्य समितियों में अपनी सेवा प्रदान की हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. डॉ. देबी प्रसाद डोगरा, सहायक प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान ने दिनांक 11-14 मार्च 2014 के दौरान बर्लिन, जर्मनी में आयोजित कंप्यूटर विज़न थियोरी एंड एप्लिकेशन्स पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "सीन रिप्रेजेंटेशन एंड एनोमेलस एक्टिविटी डिटेक्शन यूज़िंग वेटेड रिज़न एसोशिएशन ग्राफ" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

2. डॉ. मिहिर कुमार दास, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 08 अप्रैल, 2015 के दौरान एबीएनआई, बार्क, मुम्बई में मल्टीफिजिक्स एंड मल्टीस्कैल इंटीग्रेटेड सिमुलेशन ऑफ न्यूक्लियर सिस्टम (प्रोमिज़न) परियोजना की बैठक में भाग लिया।

3. डॉ. सैयद हिलाल फारुक़, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 22-24 मार्च, 2015 के दौरान राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा में आयोजित "ओसेनिक प्रोसेसर एलांग द कोस्ट ऑफ इंडिया पर राष्ट्रीय सम्मेलन" में भाग लिया।

4. डॉ. अनासुया रॉयचौधुरी, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 25-28 अप्रैल 2015 के दौरान नानजिंग, चीन में आयोजित 5 वाँ वार्षिक वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ मॉलिक्यूलर एंड सेल बायोलॉजी में "AAA+AT पासेस : स्मार्ट मशीन, वर्क डाइवर्स" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

5. श्री सुशांत कुमार पाठी, वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक ने दिनांक 29-30 अप्रैल 2015 के दौरान आईआईएसईआर, मोहाली में 11 वाँ इंडेस्ट-एआईसीटीई कंजोर्टियम के वार्षिक बैठक एवं कार्यशाला में भाग लिया।

सम्मान

1. डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ, भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर को दिनांक 20 फरवरी 2015 कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता में आयोजित सोसायटी की XLVIII वार्षिक महा बैठक में वर्ष 2015-16 (1 अप्रैल 2015 से 31 मार्च 2016) के लिए एक्सीज्यूटिव काउंसिल, ऑप्टिकल सोसायटी ऑफ इंडिया के सदस्य के रूप में चयन किया गया।

2. राहुल दुबे, एस.आर.सामंतराय, बी.के.पाणिग्राही एवं जी.वी. वेंकोपाराव द्वारा लिखी गई शोध पत्र "फेज़ स्पैस बेस्ड सिम्मेट्रिकल फाल्ट डिटेक्शन ड्यूरिंग पावर स्विंग" के लिए वर्ष 2015 के क्लैटन ग्रिफ्फन बेस्ट स्टुडेंट पेपर अवार्ड, पीआरसी, जार्जिया, यूएसए के लिए चयन किया गया।

3. डॉ. देबदत्ता स्वाईं, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ को "यूनियन रेडियो-साईंटिफिक इंटरनेशनले" द्वारा वर्ष 2015 के एट-आरएएससी 2015 युवा वैज्ञानिक पुरस्कार हेतु चयन किया गया।

फन विथ लाईट कार्यशाला

यूनेस्को द्वारा घोषित 08 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय प्रकाश दिवस के उपलक्ष्य पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 08 अप्रैल 2015 को "फन विथ लाइट" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। शहर के छह स्कूलों से लगभग 80 छात्रों ने प्राध्यापकों के साथ भाग लिया और कार्यशाला के दौरान प्रकाश के विभिन्न चरणों से रु-ब-रु हुए।

कार्यशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवा मस्तिष्कों को प्रभावशाली प्रयोगों के आसान तरीकों द्वारा प्रकाश की मौलिक अवधारणों के बारे में जानकारी प्रदान करना था। प्रयोगशाला में तैयार किए गए कई प्रयोगकर्त्ता अनुकूल प्रयोगों को छात्रों के समक्ष प्रदर्शित किया गया जिसे प्रकाश की मौलिक अवधारणों जैसे व्यतिकरण, विवर्तन, ध्रुवण, प्रकीर्णन, विवर्तन एवं सूपर्ण आंतरिक परावर्तन के प्रयोग में लाया जाता है। कार्यशाला के दौरान छात्रगण प्रकाश के विभिन्न स्रोतों जैसे हैलोजेन, मर्करी, अवरक्त एवं दर्शनीय लेज़र के व्यवहारिक प्रयोग के लिए काफी उत्साहित थे। कार्यशाला अपने उद्देश्य में सफल रही और शहर के विभिन्न स्कूलों से आए छात्रों प्रकाश के नए स्तंभों का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया। कार्यशाला के समन्वयक डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ थे।

साहित्य स्तंभ

महादेवी वर्मा का जन्म 24 मार्च सन् 1907 को (भारतीय संवत के अनुसार फाल्गुन पूर्णिमा संवत 1964 को) प्रातः 08.00 बजे फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश के एक संपन्न परिवार में हुआ। इस परिवार में लगभग २०० वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद महादेवी जी के रूप में पुत्री का जन्म हुआ था। अतः इनके बाबा बाबू बाँके बिहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी- महादेवी माना और उन्होंने इनका नाम महादेवी रखा था। महादेवी जी के माता-पिता का नाम हेमरानी देवी और बाबू गोविन्द प्रसाद वर्मा था। वे हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें *आधुनिक मीरा* के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती भी कहा है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके सामाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि *दीपशिखा* में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की जानकार होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भांति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। उनके जन्म माह के उपलक्ष्य पर प्रस्तुत है उनकी सुप्रसिद्ध काव्य संग्रह "दीपशिखा" की एक कविता— "अश्रु है यह पानी नहीं" -

"अश्रु है यह पानी नहीं"

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

यह न समझो देव पूजा के सजीले उपकरण ये,
यह न मानो अमरता से माँगने आए शरण ये,
स्वाति को खोजा नहीं है औ' न सीपी को पुकारा,
मेघ से माँगा न जल, इनको न भाया सिंधु खारा!
शुभ्र मानस से छलक आए तरल ये ज्वाल मोती,
प्राण की निधियाँ अमोलक बेचने का धन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

नमन सागर को नमन विषपान की उज्ज्वल कथा को
देव-दानव पर नहीं समझे कभी मानव प्रथा को,
कब कहा इसने कि इसका गरल कोई अन्य पी ले,
अन्य का विष माँग कहता हे स्वजन तू और जी ले।
यह स्वयं जलता रहा देने अथक आलोक सब को
मनुज की छवि देखने को मृत्यु क्या दर्पण नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

शंख कब फूँका शलभ ने फूल झर जाते अबोले,
मौन जलता दीप, धरती ने कभी क्या दान तोले?
खो रहे उच्छ्वास भी कब मर्म गाथा खोलते हैं,
साँस के दो तार ये झंकार के बिन बोलते हैं,
पढ़ सभी पाए जिसे वह वर्ण-अक्षरहीन भाषा
प्राणदानी के लिए वाणी यहाँ बंधन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!
किरण सुख की उतरती घिरतीं नहीं दुख की घटाएँ,
तिमिर लहराता न बिखरी इंद्रधनुषों की छटाएँ
समय ठहरा है शिला-सा क्षण कहाँ उसमें समाते,
निष्पलक लोचन जहाँ सपने कभी आते न जाते,
क्या वहाँ मेरा पहुँचना आज निर्वासन नहीं है?

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

आँसुओं के मौन में बोलो तभी मानूँ तुम्हें मैं,
खिल उठे मुस्कान में परिचय, तभी जानूँ तुम्हें मैं,
साँस में आहट मिले तब आज पहचानूँ तुम्हें मैं,
वेदना यह झेल लो तब आज सम्मानूँ तुम्हें मैं!
आज मंदिर के मुखर घड़ियाल घंटों में न बोलो
अब चुनौती है पुजारी में नमन वंदन नहीं है।

अश्रु यह पानी नहीं है, यह व्यथा चंदन नहीं है!

साभार—विकिपिडिया

संपादक मंडल

मार्गदर्शक

डॉ. आर.के.सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)

सलाहकार

डॉ ए.के.सिंह, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस,

डॉ.आर.झा, सहा. प्राध्यापक, एसबीएस,

संपादक

श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक